भीलवाड़ा जिले में जनजातिय जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन

Dr. Jagphool Meena

Lecturer, Department of Geography
Govt. P.G. College Rajgarh, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश

भीलवाड़ा जिले में जनजातीय जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत पत्र में किया गया है भारत में कुल 700 से अधिक जनजातिय समूह पाये जाते हैं। अधिकांश जनजातिय समूह अपनी विशिष्टता के लिए पहचाने जाते हैं। मानव समाज में सांस्कृतिक परम्पराओं की दृष्टि से इनका महत्वपूर्ण स्थान है। ये प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए, अपने 2 सामाजिक व्यवस्थाओं और संस्कृति को बनाये हुए है। कुछ जनजातियाँ, संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में पर्याप्त आगे बढ़ चुकी है। अध्ययन क्षेत्र में कुल जनसंख्या का 9.52 प्रतिशत भाग अनुसूचित जन जातियों का है। जिसका 8.91 प्रतिशत भाग गाँवों में निवास करता है। और केवल .60 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करता है ।इस शोधपत्र में भीलवाड़ा जिले में तहसील स्तर पर जनजातीय जनसंख्या वृद्धि ,वितरण , घनत्व के कम और अधिक होने के भौगोलिक कारणो का अध्ययन किया गया है ।

शब्द कुंजी :— जनजातीय समाज, जनसंख्या, वृद्धि, वितरण, घनत्व, आवास, अनुसूचित, समूह

प्रस्तावना :— भीलवाड़ा राजस्थान का एक जिला है भारत में कुल 700 से अधिक जनजातिय समूह पाये जाते हैं। अधिकांश जनजातिय समूह अपनी विशिष्टता के लिए पहचाने जाते हैं। मानव समाज में सांस्कृतिक परम्पराओं की दृष्टि से इनका महत्वपूर्ण स्थान है। ये प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए, अपने 2 सामाजिक व्यवस्थाओं और संस्कृति को बनाये हुए है। कुछ जनजातियाँ, संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में पर्याप्त आगे बढ़ चुकी है।[1]

अध्ययन क्षेत्र भीलवाड़ा जिले का नामकरण भी, भील जनजाति के निवास के कारण हुआ है। भील शब्द का अर्थ तमिल भाषा में ″विल्लवर″ शब्द से है, जिसका शाब्दिक अर्थ है; धनुर्धारी हैं।, भील जनजाति के लोग जंगलों में रहकर धनुष बाण द्वारा शिकार करके भोजन एकत्रित करते है। वर्तमान समय में भील कृषि कार्यों एवं पशुपालन में संलग्न हो गये हैं। गिलिन एवं गिलिन के अनुसार ″स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो, और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो, जनजाति कहते है।″[2]

भीलवाड़ा की भौगोलिक स्थिति :—

भीलवाड़ा राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में $25^0 1'$ से $25^0 58'$ उत्तरी अक्षांश एवं $74^0 1'$ से $75^0 28'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उत्तर में अजमेर जिला, दक्षिण में चित्तौड़गढ़, पूर्व में बूंदी और टोंक एवं पश्चिम में राज समन्द जिला स्थित है। पश्चिम से पूर्व तक जिले की कुल लम्बाई 144 किलोमीटर है, जबकि उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई 104 किमी. है तथा कुल क्षेत्रफल 10455 वर्ग किलोमीटर है, जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 3.05 प्रतिशत है। पश्चिमी भाग को छोड़कर सामान्यतः जिला आयता कार है। पूर्वी भाग के मुकाबले में पश्चिमी भाग अधिक चौड़ा है।[3]

प्रशासनिक दृष्टि से भीलवाड़ा जिलें में आठ 16 उपखण्ड, 16 तहसील, 14 पंचायत समिति, 383 ग्राम पंचायते एवं 1843 आबाद राजस्व गाँव है अध्ययन क्षेत्र में 7 नगर पालिकाएँ तथा 8 कस्बे है। परम्परागत कथन के अनुसार प्राचीन समय में यहाँ अधिकांश निवासी भील थे। जिनके कारण यह स्थान भीलवाड़ा के नाम से जाना जाने लगा। नाम के विपरित इस क्षेत्र में बहुत कम भील रहते है। ऐसा भी कहा जाता है, कि वर्तमान भीलवाड़ा नगर में एक टकसाल थी, जहाँ पर भीलड़ी नाम के सिक्के ढ़ाले जाते थे इसलिए इस जिले का नाम भीलवाड़ा हो गया।[4]

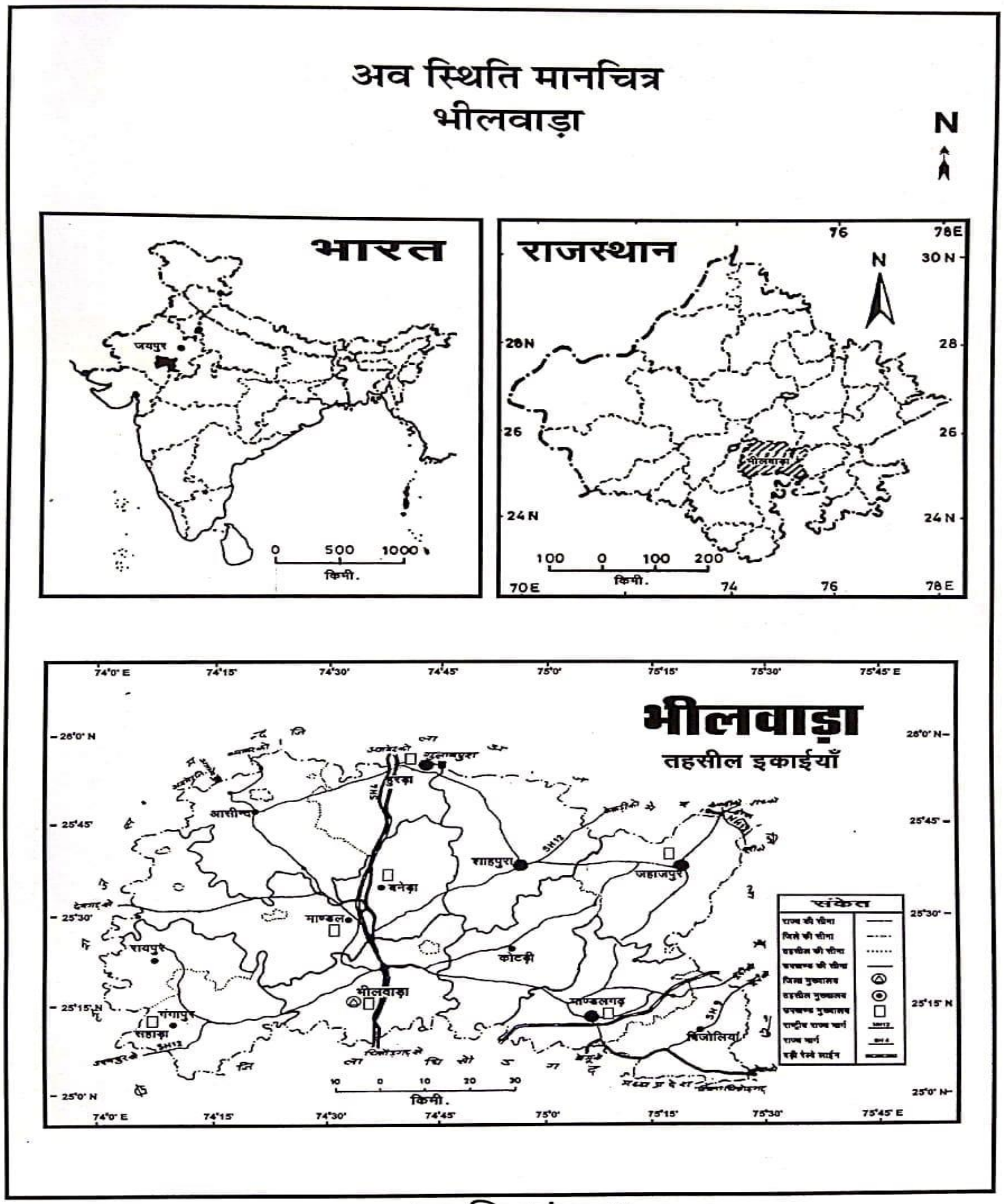

मानचित्र संख्या 1

उददेश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र के उददेश्य निम्न प्रकार है ।

1 भीलवाड़ा जिले में जनजातीय जनसंख्या के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना ।

2 भीलवाड़ा जिले में जनजातीय जनसंख्या की वृद्धि दर का अध्ययन करना ।

3 जनजातीय की साक्षरता का अध्ययन करना ।

परिकल्पना:–

1 भीलवाड़ा जिले में जनजातीय जनसंख्या अधिक पायी जाती है ।

2 भीलवाड़ा जिले में जनजातीय वृद्धि दर अधिक है ।

अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों का प्रयोग किया गया है प्राथमिक आकड़ों का संग्रह व्यक्गित सम्पर्क, प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से किया गया है ,द्वितीयक आकड़ो का संकलन गैजेटियर,

सांख्यिकीय रूपरेखा, सांख्यिकी विभाग, नियोजन विभाग, एवं पुस्तको के माध्यमो से किया है ।इस अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक है ।

भारत में कुल 700 से अधिक जनजातिय समूह पाये जाते हैं। अधिकांश जनजातिय समूह अपनी विशिष्टता के लिए पहचाने जाते हैं। मानव समाज में सांस्कृतिक परम्पराओं की दृष्टि से इनका महत्वपूर्ण स्थान है। ये प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए, अपने 2 सामाजिक व्यवस्थाओं और संस्कृति को बनाये हुए है। कुछ जनजातियाँ, संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में पर्याप्त आगे बढ़ चुकी है।[5]

अध्ययन क्षेत्र भीलवाड़ा जिले का नामकरण भी, भील जनजाति के निवास के कारण हुआ है। भील शब्द का अर्थ तमिल भाषा में "विल्लवर" शब्द से है, जिसका शाब्दिक अर्थ है; धनुर्धारी हैं।, भील जनजाति के लोग जंगलों में रहकर धनुष बाण द्वारा शिकार करके भोजन एकत्रित करते है। वर्तमान समय में भील कृषि कार्यों एवं पशुपालन में संलग्न हो गये हैं। गिलिन एवं गिलिन के अनुसार "स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो, और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो, जनजाति कहते है।"[6]

राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित सूची में 12 अनुसूचित जन जातियाँ एवं उनकी 39 उपजातियाँ वर्णित है।

(1) भील, भील गरासिया, ढ़ोली–भील, डूगरी–भील, डूगरी गरासिया, मेंवाती भील, रावल भील, ताड़वी भील, भागलिया, भिंलाला, पावड़ा वसावा, वसावे। (2) भील–मीणा (3) डामोर–डमरिया (4) वानका, तड़वी वालवी, तेतड़िया (5) गरासिया (राजपूत गरासिया को छोड़कर) (6) काथोड़ी, कतकूढ़ी, ढोर, काथोड़ी, ढोर कतकड़ी, सोन काथोड़ी, सोन कतकड़ी (7) कोकना, कोकनी, कूकना (8) कोली खोर टोकरे कोली, कोलचा कोलधा (9) मीणा (10) नायकड़ा, नायक, चोलियावाला नायक, कापड़िया, नायक मोटा, नाना नायक (11) पटोलिया (12) सहरिया, सहारिया

उपरोक्त जनजातियों में से अध्ययन क्षेत्र में भील–मीणा एवं गरासिया जनजाति मुख्यतः पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र में जन जातियों के अध्ययन के लिए निम्न निर्देशांक प्रयुक्त किये है।

1 जनजातिय जनसंख्या वितरण :–

अध्ययन क्षेत्र में कुल जनसंख्या का 9.52 प्रतिशत भाग अनुसूचित जन जातियों का है। जिसका 8.91 प्रतिशत भाग गाँवों में निवास करता है। और केवल .60 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करता है। जनजातिय जनसंख्या वितरण को तालिका संख्या 1 एवं मानचित्र संख्या 1(A) में दर्शाया गया है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं। कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या जहाजपुर तहसील 33.19 प्रतिशत है। जो इस तहसील की कुल जनसंख्या के एक तिहाई से अधिक है। दूसरा स्थान आसींद तहसील 9.37 प्रतिशत , तीसरा स्थान माण्डलगढ़ में 9.17 प्रतिशत,बिजोलिया में 8.39 प्रतिशत जनसंख्या पाई जाती है। सबसे कम जनजातिय जनसंख्या रायपुर तहसील में 3.04 प्रतिशत रहती है। नगरीय जनजातिय जनसंख्या का सर्वाधिक भाग जहाजपुर तहसील 38.48 प्रतिशत तथा सबसे कम भाग हुरड़ा तहसील में .46 प्रतिशत पाया जाता है।

तालिका संख्या 1

भीलवाड़ा जनजातिय जनसंख्या वितरण 2011

नाम तहसील	**आसीन्द**	**हुरड़ा**	**शाहपुरा**	**जहाजपुर**	**भीलवाड़ा**	**कोटडी**	**जिला भीलवाड़ा**
जनजातिय जनसंख्या	21496	9811	19214	76088	13761	10021	229273
प्रतिशत	9.37	4.28	8.38	33.19	6.00	4.37	9.52
नाम तहसील	**माण्डल**	**सहाड़ा**	**बनेंड़ा**	**रायपुर**	**माण्डलगढ़**	**बिजौलिया**	
जनजातिय जनसंख्या	13221	9397	9023	6986	21015	19240	
प्रतिशत	5.76	4.09	3.93	3.04	9.17	8.39	

स्रोत – जिला सांख्यिकी रूपरेखा जिला भीलवाड़ा

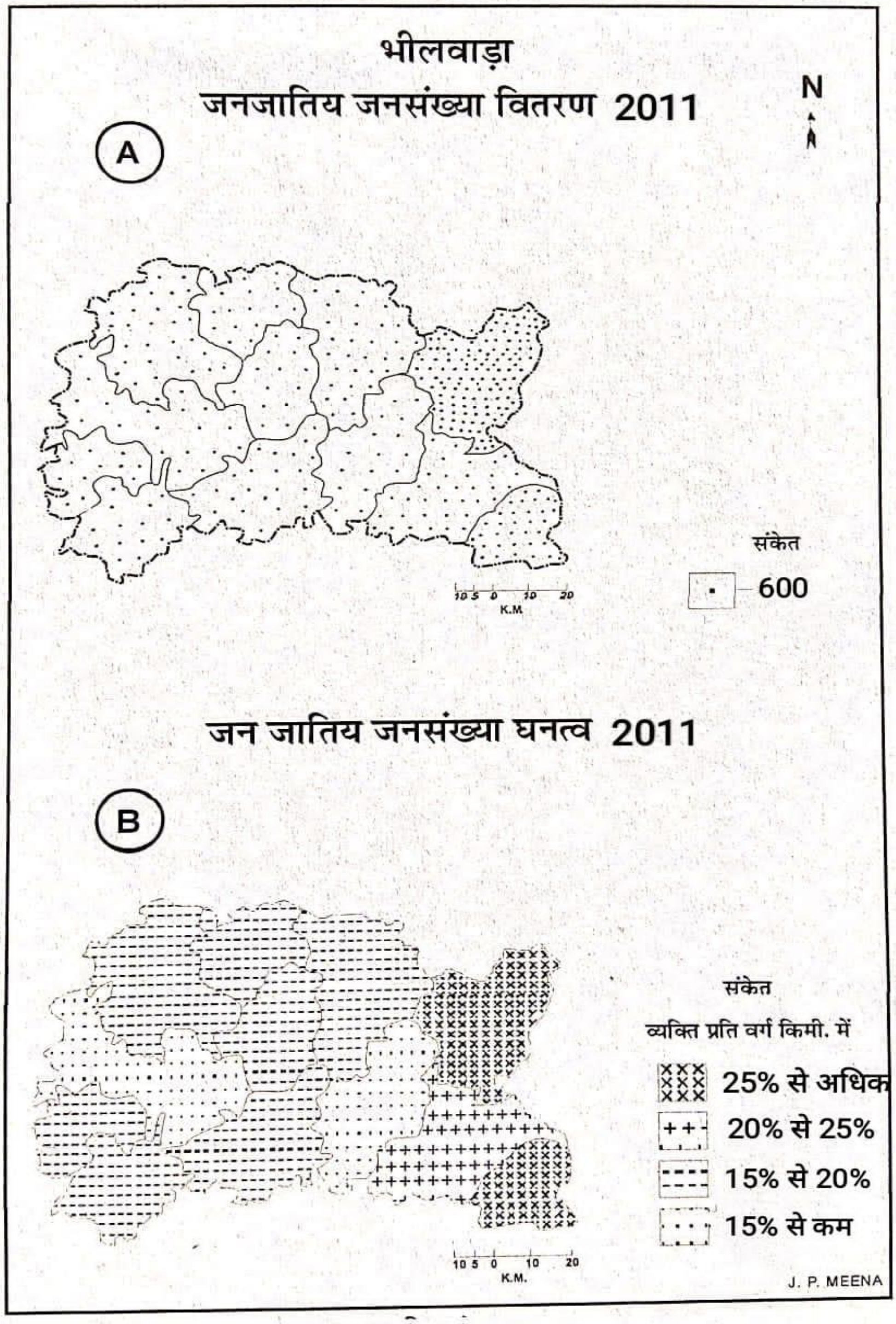
भीलवाड़ा
जनजातिय जनसंख्या वितरण 2011
N
A
संकेत
600
10 5 0 10 20
K.M.
जन जातिय जनसंख्या घनत्व 2011
B
संकेत
व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. में
25% से अधिक
20% से 25%
15% से 20%
15% से कम
10 5 0 10 20
K.M.
J. P. MEENA

मानचित्र संख्या 1

तालिका संख्या 2
भीलवाड़ा जनजातिय जनसंख्या घनत्व – 2011

नाम तहसील	आसीन्द	हुरड़ा	शाहपुरा	जहाजपुर	भीलवाड़ा	कोटड़ी	जिला भीलवाड़ा
जनजातिय जनसंख्या घनत्व	19	16	17	73	16	11	
नाम तहसील	माण्डल	सहाड़ा	बनेंड़ा	रामपुर	माण्डलगढ़	बिजौलिया	
जनजातिय जनसंख्या घनत्व	11	15	13	13	23	31	22

स्रोत – जिला सांख्यिकी रूपरेखा जिला भीलवाड़ा

2 जनजातिय जनसंख्या घनत्व

जिले में प्रति वर्ग किमी. क्षेत्र पर बसने वाली जनजातिय जनसंख्या जनजातिय जनसंख्या घनत्व कहलाती है। अध्ययन क्षेत्र की जनजातिय जनसंख्सा घनत्व को तालिका संख्या 2 एवं मानचित्र संख्या 1(B) से स्पष्ट है। कि क्षेत्र में औसत घनत्व 22 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। सबसे अधिक जनजातिय जनसंख्या घनत्व जहाजपुर तहसील में 73 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी., दूसरे स्थान बिजौलिया तहसील 31 व्यक्ति माण्डलगढ़ में 23 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। सबसे कम जनजातिय जनसंख्या घनत्व माण्डल तहसील में 11 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. पाया जाता है।

तालिका संख्या 3
भीलवाड़ा जनजातिय जनसंख्या वृद्धि 2001–2011

नाम तहसील	आसीन्द	हुरड़ा	शाहपुरा	बनेंड़ा	माण्ड़ल	रायपुर	जिला भीलवाड़ा
जनजातिय जनसंख्या वृद्वि% में	47.45	37.08	26.10	32.10	41.91	30.75	26.98
नाम तहसील	सहाड़ा	भीलवाड़ा	कोटड़ी	जहाजपुर	माण्डलगढ़	बिजौलिया	
जनजातिय जनसंख्या वृद्वि% में	34.72	26.17	22.67	22.89	20.36	15.40	

स्रोत – जिला जनगणना पुस्तिका जिला भीलवाड़ा

3 जनजातिय जनसंख्या वृद्धि

भीलवाड़ा जिले में दशक 2001–2011 के मध्य जनजातिय जनसंख्या में 26.98 प्रतिशत वृद्धि हुई है। 2001 में जनजातिय जनसंख्या 180556 थी जो बढ़कर 2011 में 229273 हो गई। अध्ययन क्षेत्र की जनजातिय जनसंख्या को तालिका संख्या 3 एवं मानचित्र संख्या 2(A) से स्पष्ट है। कि सबसे अधिक वृद्धि आसींद तहसील 47.45 प्रतिशत, माण्डल में 41.91 प्रतिशत ,सहाड़ा 34.72 प्रतिशत रायपुर 30.75 प्रतिशत, भीलवाड़ा 26.17 प्रतिशत तथा जहाजपुर तहसील में 22.67 प्रतिशत हुई। तथ सबसे कम वृद्धि बिजौलिया तहसील में 15.40 प्रतिशत हुई है। क्षेत्र में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि आसींद तहसील में हुई। जिसका मुख्य कारण नगरीकरण अथवा लोगों का रोजगार के कारण शहर में आकर बसना है।

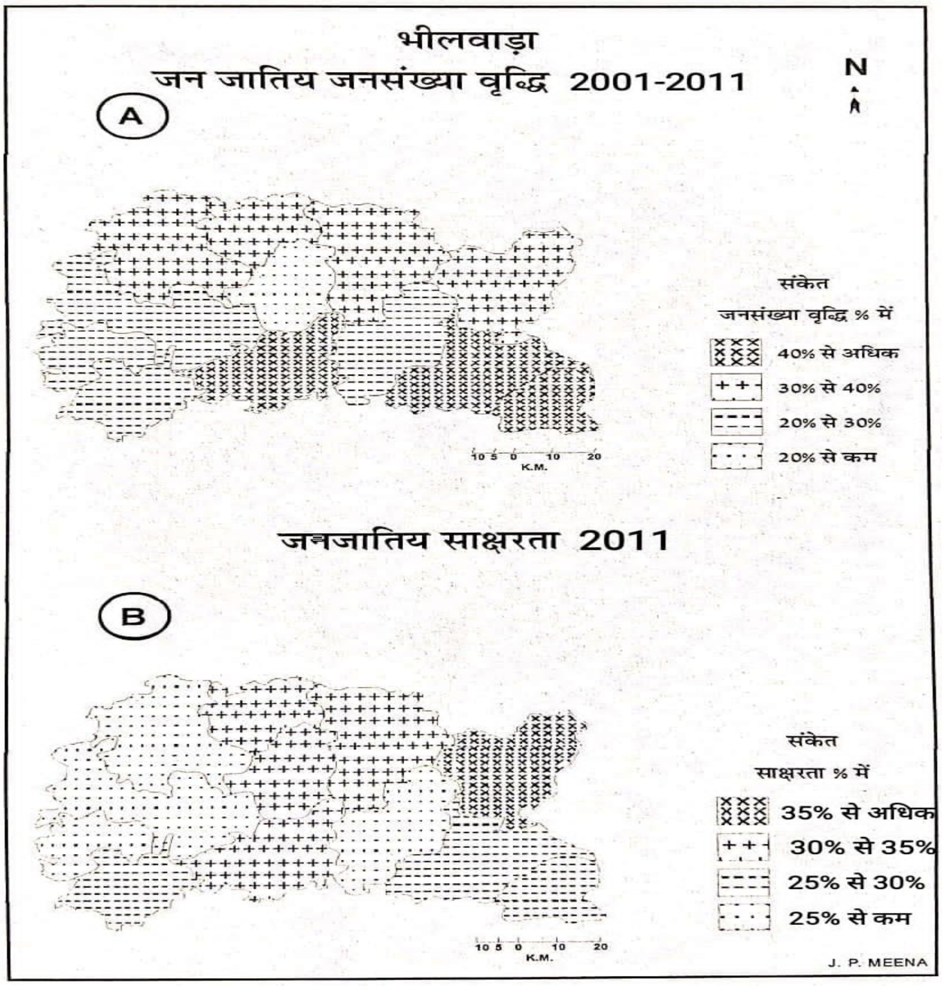

मानचित्र संख्या 2

क्योंकि जनजातियाँ भी धीरे–धीरे मुख्यधारा से जुड़ने लगी है। अतः शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, की तलाश में लोगों का शहर की तरफ पलायन हुआ है।

4 साक्षरता

साक्षर से तात्पर्य उन व्यक्तियों से है, जो किसी भाषा को सामान्य रूप से लिख पढ़ सकते है। जनसंख्या का साक्षर होना किसी भी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षित श्रमिक चाहे उद्योग में कार्य करें या निजी व्यवसाय में कार्य करें, वह पुरातन विचारों से दूर रहते हुए नये विचार एवं तकनीक से उत्पादन वृद्धि में सहयोग देता है।[7]

तालिका संख्या 4
भीलवाड़ा जनजातिय साक्षरता 2011

नाम तहसील	आसीन्द	हुरड़ा	शाहपुरा	बनेंड़ा	माण्ड़ल	रायपुर	जिला भीलवाड़ा
साक्षरता % में	21.41	30.57	30.06	30.49	20.67	21.49	
नाम तहसील	सहाड़ा	भीलवाड़ा	कोटड़ी	जहाजपुर	माण्डलगढ़	बिजौलिया	33.38
साक्षरता % में	23.23	31.61	20.89	49.30	27.47	27.60	

स्रोत – जिला जनगणना पुस्तिका जिला भीलवाड़ा

अध्ययन क्षेत्र में जनजातिय जनसंख्या की साक्षरता वर्ष 2011 के अनुसार 33.38 प्रतिशत है। जो जिले की औसत साक्षरता 61.4 प्रतिशत की आधी है। जनजातियों में पुरूष साक्षरता 44.26 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 21.73प्रतिशत पाई जाती है। जो कि जिले के औसत पुरूष साक्षरता 75.3 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 47.2 प्रतिशत से आधा एवं एक तिहाई मात्र है। जो जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास में प्रमुख बाधा है। जनजातिय साक्षरता को तालिका संख्या 4 एवं मानचित्र संख्या 2(B) से स्पष्ट है। कि अध्ययन क्षेत्र में जनजातिय साक्षरता सबसे अधिक जहाजपुर तहसील में 49.30 प्रतिशत है। यहाँ पुरूष साक्षरता 58.64 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 28.45 प्रतिशत है। दूसरा स्थान भीलवाड़ा तहसील में 28.61 प्रतिशत साक्षरता है। तीसरा स्थान हुरड़ा तहसील में 27.17 प्रतिशत साक्षरता पाई जाती है।

जहाजपुर, भीलवाड़ा तहसीलों में अधिक साक्षरता का मुख्य कारण इन क्षेत्रों में मीणा जनजाति का निवास, उपजाऊ कृषि क्षेत्र, सिंचाई सुविधा होने तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने एवं क्षेत्र में अच्छी शैक्षणिक सुविधायें होने के कारण साक्षरता अधिक है जबकि न्यूनतम साक्षरता माण्डल तहसील में 18.67 प्रतिशत पाई जाती है। जिले में 40 प्रतिशत से अधिक जनजातिय साक्षरता वाली तहसीलों में मात्र जहाजपुर तहसील आती हैं। 30–40 प्रतिशत साक्षरता वर्ग में भीलवाड़ा, हुरड़ा शाहपुरा व बनेड़ा तहसीलें आती है। तथा 25–30 प्रतिशत साक्षरता वर्ग में बिजौलिया, माण्डलगढ़ तथा सहाड़ा तहसीलें आती है। एवं न्यून साक्षरता वर्ग 25 प्रतिशत से कम में रायपुर, कोटड़ी, आसीन्द व माण्डल तहसीलें आती है।

निष्कर्ष :–

भीलवाड़ा जिले में भील, मीना, एवं गरासिया जनजाति ही मुख्यतः पायी जाती है यहा कुल जनसंख्या का 9.52 प्रतिशत भाग जनजातियों का है और अधिकांश जनसंख्या गॉवो में निवास करती है केवल .60 प्रतिशत लोग ही शहरो में रहते है जो इनके गरीब और पिछड़ेपन का संकेत है क्योकि गरीबी और अशिक्षा के कारण शहरो का भार नहीं उठा पाते है जिले की सभी तहसिलो में जनजातिय जनसंख्या पायी जाती है लेकिन सबसे अधिक जहाजपुर में 33.19 प्रतिशत पायी जाती है तथा सबसे कम रायपुर कम पायी जाती है नगरीय जनजातीय जनसंख्या भी सबसे अधिक जहाजपुर में तथा सबसे कम हुरड़ा में मिलती है । जिले में जनजातियो का सबसे अधिक घनत्व जहाजपुर 73 व्यक्ति एवं माण्डल में सबसे कम 11 व्यक्ति पाया जाता है । जिले का औसत 22 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है । गत दशक में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि आसिंद तहसील में 47.45 प्रतिशत रही तथा बिजौलिया में सबसे कम रही । जिले में जनजातीय साक्षरता दर 33.38 प्रतिशत लोग ही पढे लिखे है जबकि जिले की साक्षरता दर 61.40 प्रतिशत है तहसील अनुसार सबसे अधिक जनजातीय साक्षरता दर जहाजपुर में 49.30 प्रतिशत तथा सबसे कम साक्षरता माण्डल में 18.67 प्रतिशत मिलती है , शिक्षा की कमी एवं गरीबी के कारण जनजातीय लोगो का सामाजिक स्तर उच्च नहीं है तथा अज्ञानता के कारण सरकारी योजनाओं का पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं कर पाते है ।

सुझाव :–

1 अध्ययन क्षेत्र में जनजातीय जनसंख्या के उत्थान के लिए और अधिक प्रयास की आवश्यकता है ।
2 साक्षरता बढाने के लिए गॉवो में शैक्षणिक सुविधाओं विस्तार किया जाये ।
3 सरकारी योजनाओं के द्वारा आर्थिक मदद की जाये ।
4 जनजातीय जनसंख्या वृद्धि रोकने हेतु जागरूकता पैदा की जाये ।
5 ग्रामीण स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराया जाये ।

संदर्भ सूची

1. गुर्जर आर.के. जाट बी.सी. 2012 ''मानव भूगोल'' पंचशील प्रकाशन जयपुर पृष्ठ 195
2. शर्मा एच. एस., एम. एल. 2013 ''राजस्थान का भूगोल'' पंचशील प्रकाशन जयपुर पृष्ठ 335–344
3. नन्द किशोर सुगन चन्द कलवार 1994'' सामाजिक–आर्थिक भूगोल'' पोइन्टर पब्लिशर्स एस.एम.एस. हाई वे जयपुर पृष्ठ 46–61
4. सेन्सस ऑफ इण्डिया 1991 जिला भीलवाड़ा पृष्ठ 24
5. सैदावत, पुष्प 2013 ''राजस्थान का भूगोल'' रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ
6. पत्रिका प्रतिवेदन ''राजस्थान की जनजातियाँ (भील) माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर
7. नवल मदनलाल (1989) ''अनुसूचित जातियाँ एवं जनजातियाँ (राजस्थान के परिपेक्ष्य में) ब्रिलिचरे पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली पृ. स. 28–29
8. काले सुश्री मलिक (1985–86) 'दक्षिणी राजस्थान की भील जनजाति की सांस्कृतिक परम्पराओं में संगीत और विवेचना'' मा. वर्मा आ. जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्धान उदयपुर जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग को प्रेसित पृ. स.22–32
9. जोशी हेमलता भगौरा एल.आर. (2000), जनजातियों का भौगोलिक अध्ययन, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा. लि., जयपुर पृष्ठ 69–75
10. डॉ. अम्बेड़कर सम्पूर्ण वाडयम (1993) ''जाति प्रथा'' प्रकाशन कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की ओर से प्रकाशन विभाग